सत्यमेव जयते

भारत का विदेशी ऋण

प्रास्थिति रिपोर्ट

भारत सरकार
वित्त मंत्रालय
आर्थिक कार्य विभाग
अगस्त 2007

सत्यमेव जयते

वित्त मंत्री

भारत

प्राक्कथन

मुझे "भारत का विदेशी ऋण : प्रास्थिति रिपोर्ट" प्रस्तुत करते हुए खुशी हो रही है जो इस श्रृंखला में तेरहवीं कड़ी है। रिपोर्ट के वर्तमान खंड में 2006-07 के दौरान भारत के विदेशी ऋण में हुआ घटनाक्रम प्रस्तुत किया गया है और इसमें 1990 से देश के विदेशी ऋण की स्थिति की तस्वीर प्रस्तुत की गई है।

भारत ने अन्य ऋणग्रस्त देशों की तुलना में बेहतर काम किया है। विश्व बैंक की नवीनतम *ग्लोबल डेवलपमेंट फाइनेंस, 2007* जिसमें 2005 के आंकड़े अंतर्विष्ट हैं, के अनुसार भारत के संबंध में सकल राष्ट्रीय आय से विदेशी ऋण का अनुपात चीन के बाद दूसरा सबसे कम अनुपात था। भारत के ऋण पोर्टफोलियो में रियायती ऋण का घटक शीर्ष दस ऋणी देशों में सबसे अधिक था। इसी प्रकार, विदेशी मुद्रा भंडार के संदर्भ में अल्पावधिक ऋण का अनुपात भारत के संबंध में सबसे कम था और कुल ऋण में अल्पावधिक ऋण का हिस्सा दूसरा सबसे कम हिस्सा था। भारत ने 1990 और 2005 के बीच विदेशी ऋण की सबसे कम राशि संचित की है।

भारत का विदेशी ऋण स्टॉक 31 मार्च, 2007 की स्थिति के अनुसार 155.0 बिलियन अमरीकी डालर के स्तर पर था जो सकल घरेलू उत्पाद का 16.4 प्रतिशत बैठता है। विदेशी संसाधन जुटाने के लिए भारत सरकार द्वारा अपनायी गई नीति भुगतान संतुलन की स्थिति को वहनीय स्तर पर बनाए रखने और विदेशी ऋण को नियंत्रणीय सीमाओं में रखने के उद्देश्य से मार्गदर्शित है। व्यापार और निवेश के उदारीकरण के साथ-साथ ऋण सृजित न करने वाले प्रवाहों को आकर्षित करने के पक्ष में नीतिगत बदलाव ने विदेशी क्षेत्र के प्रबंधन में अच्छा निष्पादन किया प्रतीत होता है। सरकार की विदेशी ऋण नीति रियायती शर्तों पर दीर्घावधिक परिपक्वताओं वाले सरकारी ऋण जुटाने, अनिवासी भारतीय जमाराशियों पर ब्याज दरों को युक्तिसंगत बनाने, वाणिज्यिक उधारों के स्तर को सीमित करने और उनके अंतिम-प्रयोग को प्रतिबंधित करने तथा अल्पावधिक ऋण का अनुवीक्षण करने पर केंद्रित रही है।

पी. चिदम्बरम

(पी.चिदम्बरम)
वित्त मंत्री

नई दिल्ली
अगस्त 2007

विषय सूची

		पृष्ठ संख्या
1.	**कार्यकारी सार**	1
2.	**विदेशी ऋण**	2
	2.1 प्रस्तावना	2
	2.2 विदेशी ऋण स्टॉक	2
	2.3 विदेशी ऋण और सकल घरेलू उत्पाद	6
	2.4 विदेशी ऋण और विदेशी मुद्रा परिसंपत्तियां	6
	2.5 अंतर्राष्ट्रीय तुलना	7
	(क) विदेशी ऋण को विदेशी मुद्रा भण्डार का कवर	7
	(ख) विदेशी ऋण स्टॉक	7
	(ग) ऋण स्टॉक में परिवर्तन	7
	(घ) विदेशी ऋण का वर्तमान मूल्य	8
3.	**अल्पावधिक ऋण**	9
	3.1 मूल परिपक्वता के अनुसार अल्पावधिक ऋण	9
	3.2 अवशिष्ट परिपक्वता के अनुसार अल्पावधिक ऋण	11
4.	**ऋण स्टॉक का वर्गीकरण**	12
	4.1 ऋणदाता-वार वर्गीकरण	12
	4.2 उधारकर्ता-वार वर्गीकरण	13
	4.3 लिखत-वार वर्गीकरण	13
	4.4 रियायती ऋण	15
	4.5 मुद्रा संरचना	16
5.	**ऋण शोधन**	17
	5.1 ऋण शोधन भुगतान	17
	5.2 ऋण शोधन भुगतानों के पूर्वानुमान	20
6.	**विदेशी ऋण प्रबन्धन**	21
	6.1 उच्च लागत वाले विदेशी ऋणों की परिपक्वता पूर्व अदायगी	21
	6.2 अल्पावधिक ऋण	23
	6.3 अनिवासी भारतीय जमाराशियां	23
	6.4 विदेशी वाणिज्यिक उधार	23
	6.5 पूर्ण पूंजी खाता परिवर्तनीयता संबंधी उच्चाधिकार प्राप्त समिति की सिफारिशें	28
	6.6 विदेशी ऋण की मॉनीटरिंग	28
7.	**सरकारी विदेशी ऋण प्रबन्धन**	32
	7.1 संगठनात्मक ढांचा	32
	7.2 सरकारी विदेशी ऋण प्रबंधन	32
	7.3 सरकारी विदेशी ऋण शोधन भुगतान	33
	7.4 विदेशी सहायता के अंतर्गत सरकारी खाते पर ऋण शोधन अनुमान	34
8.	**विदेशी ऋण पर आकस्मिक देनदारियां**	36
	8.1 सरकार द्वारा गारंटीकृत विदेशी ऋण	36

पृष्ठ संख्या

9. निष्कर्ष 37

बॉक्स

6.1 विदेशी वाणिज्यिक उधारों और व्यापार ऋण संबंधी मौजूदा नीति 26

7.1 सरकारी ऋण कोटि-निर्धारण (क्रेडिट रेटिंग) 35

चित्र

2.1 मार्च, 2007 के अंत में विदेशी ऋण की संरचना 3

2.2 सकल घरेलू उत्पाद और विदेशी ऋण की वृद्धि दर तथा सकल घरेलू उत्पाद के प्रति विदेशी ऋण का अनुपात 6

2.3 कुल विदेशी ऋण की तुलना में विदेशी मुद्रा परिसम्पत्तियों का अनुपात 6

2.4 अन्तर्राष्ट्रीय तुलना-शीर्ष दस ऋणी देशों के विदेशी ऋण को प्राप्त विदेशी मुद्रा का कवर, 2005 7

2.5 1990 और 2005 के बीच विदेशी ऋण में हुई वृद्धि की अंतर्राष्ट्रीय तुलना 8

3.1 अन्तर्राष्ट्रीय तुलना-कुल विदेशी ऋण में अल्पावधिक ऋण का हिस्सा, 2005 10

3.2 अन्तर्राष्ट्रीय तुलना-विदेशी मुद्रा भंडार के संबंध में अल्पावधिक ऋण का अनुपात-2005 10

4.1 अन्तर्राष्ट्रीय तुलना-कुल ऋण में रियायती ऋण का हिस्सा, 2005 15

5.1 ऋण शोधन अनुपात तथा विदेशी मुद्रा आस्तियों की तुलना में ऋण शोधन भुगतान का अनुपात 18

6.1 भारतीय कारपोरेट ऋण पत्रों पर मासिक प्राप्ति दरें और लिबोर 25

सारणियां

2.1 भारत का बकाया विदेशी ऋण 2

2.2 भारत का विदेशी ऋण 3

2.3 मुख्य विदेशी ऋण संकेतक 4

2.4 दसवीं पंचवर्षीय योजनावधि के दौरान विदेशी ऋण 5

2.5 भारत की अन्तर्राष्ट्रीय निवेश स्थिति 5

2.6 अंतर्राष्ट्रीय तुलना - विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में शीर्ष दस ऋणी देश, 2005 7

2.7 अंतर्राष्ट्रीय तुलना - ऋण का वर्तमान मूल्य और आय वर्गीकरण, 2005 8

3.1 मूल परिपक्वता के अनुसार अल्पावधिक ऋण 9

3.2 अवशिष्ट परिपक्वता के अनुसार अल्पावधिक ऋण 11

4.1 ऋणदाता श्रेणी के अनुसार बकाया विदेशी ऋण 12

4.2 उधारकर्ता वर्गीकरण के अनुसार विदेशी ऋण 13

4.3 मार्च 2007 के अन्त में बकाया दीर्घावधिक विदेशी ऋण का लिखत-वार वर्गीकरण, 14

4.4 रियायती ऋण का हिस्सा 15

4.5 विदेशी ऋण की मुद्रा संरचना 16

5.1 भारत का विदेशी ऋण शोधन भुगतान 17

5.2 भारत के विदेशी ऋण पर निहित ब्याज दरें 18

5.3 ऋणदाता श्रेणी के अनुसार ऋण शोधन भुगतान 19

5.4 अल्पावधिक ऋण के अंतर्गत मूलधन की अदायगियां 19

पृष्ठ संख्या

5.5	अन्तर्राष्ट्रीय तुलना-विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में दस शीर्ष ऋणी देशों द्वारा विदेशी ऋण शोधन भुगतान, 2005	20
5.6	ऋण शोधन भुगतान का पूर्वानुमान	20
6.1	विदेशी सहायता कार्यक्रम के अंतर्गत जुटाए गए सरकारी एवं गैर-सरकारी ऋणों की समय पूर्व अदायगी	21
6.2	सरकारी ऋण का देश-वार और संस्था-वार समय-पूर्व भुगतान	22
6.3	विदेशी वाणिज्यिक उधार	24
6.4	ब्याज दरों की तुलना 2005-06 और 2006-07	25
6.5	विश्व बैंक/अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष की क्यूईडीएस - क्षेत्रक के अनुसार भारत के सकल विदेशी ऋण की स्थिति	29
6.6	क्यूईडीएस के अनुसार चुनिंदा औद्योगिक और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं की दिसंबर 2006 के अन्त में सकल विदेशी ऋण की स्थिति	30
7.1	सरकारी विदेशी ऋण	33
7.2	सरकारी विदेशी ऋण-शोधन भुगतान (वास्तविक)	34
7.3	विदेशी सहायता के अंतर्गत सरकारी खाते पर ऋण शोधन भुगतान का अनुमान	34
7.4	विकासशील देशों में शीर्षस्थ दस ऋणी देशों के ऋण कोटि-निर्धारण	35
7.5	भारत का सरकारी ऋण कोटि-निर्धारण वर्ष 2005 से 2007 तक	35
8.1	सरकार द्वारा गारंटीकृत वाला विदेशी ऋण	36

अनुबंध

अनुबंध I.	भारत का बकाया विदेशी ऋण (वार्षिक-करोड़ रुपए)	39-41
अनुबंध II.	भारत का बकाया विदेशी ऋण (वार्षिक-मिलियन अमरीकी डालर)	42-44
अनुबंध III.	भारत का बकाया विदेशी ऋण (त्रैमासिक-करोड़ रुपए)	45-47
अनुबंध IV.	भारत का बकाया विदेशी ऋण (त्रैमासिक-मिलियन अमरीकी डालर)	48-50
अनुबंध V.	अन्तर्राष्ट्रीय तुलना - शीर्ष दस ऋणी देश, 2005	51
अनुबंध VI.	उधारकर्ता श्रेणी के अनुसार विदेशी ऋण	52
अनुबंध VII.	भारत के विदेशी ऋण शोधन भुगतान—स्रोत-वार	53
अनुबंध VIII.	ऋणदाता श्रेणी के अनुसार भारत की ऋण शोधन अदायगियां	54
अनुबंध IX.	पूर्ण पूंजी खाता परिवर्तनीयता संबंधी समिति (तारापोर समिति-II, 2006) की रिपोर्ट - विदेशी ऋण से संबंधित सिफारिशें	55
अनुबंध X.	मुम्बई को एक अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय केन्द्र बनाने से संबंधित उच्चाधिकार प्राप्त विशेषज्ञ समिति (एचपीईसी)	56

संकेताक्षर 57-58

1. कार्यकारी सार

1.1 भारत का विदेशी ऋण स्टाक मार्च अन्त 2006 के 126.5 बिलियन अमरीकी डालर के स्तर से बढ़ता हुआ मार्च अन्त 2007 को 155.0 बिलियन अमरीकी डालर के स्तर पर था। वर्ष के दौरान 28.5 बिलियन अमरीकी डालर का ऋण संचय 22.6 प्रतिशत की बढ़ोतरी की द्योतक है। वर्ष के दौरान हुई इस कुल ऋण वृद्धि की लगभग 10 प्रतिशत वृद्धि अन्य मुख्य अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राओं की तुलना में अमरीकी डालर के कमज़ोर पड़ने के कारण हुए मूल्यन परिवर्तन के परिणामस्वरूप हुई कही जाती है। रुपये मूल्य के संदर्भ में, मार्च-अन्त 2007 में भारत का विदेशी ऋण 675,857 करोड़ रुपये था जो मार्च-अन्त, 2006 के 564,553 करोड़ रुपये के स्तर में 19.7 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाता है। अमरीकी डालर की तुलना में भारतीय रुपये की मूल्य वृद्धि के कारण ही मुख्यतया 2006-07 में भारत के विदेशी ऋण में हुई वृद्धि डालर के मुकाबले रुपये मूल्य में कम रही थी। घटक-वार इस वृद्धि में 56 प्रतिशत योगदान वाणिज्यिक उधारों का रहा जिनके बाद अनिवासी भारतीय (एनआरआई) जमाराशियों (16 प्रतिशत), अल्पावधिक ऋण (12 प्रतिशत) और बहुपक्षीय ऋण (11 प्रतिशत) का स्थान रहा।

1.2 जहां वर्ष के दौरान कुल ऋण स्टाक में वृद्धि हुई, वहीं विदेशी ऋण के महत्वपूर्ण संकेतकों की घट-बढ़ में मिश्रित रूख देखा गया। ऋण शोधन अनुपात में स्पष्ट सुधार देखा गया जब वह 2005-06 के 9.9 प्रतिशत के स्तर से गिरता हुआ 2006-07 में 4.8 प्रतिशत पर आ गया। इसके अलावा, विदेशी मुद्रा भण्डार ने कुल विदेशी ऋण स्टाक को 129 प्रतिशत तक कवर प्रदान किया। तथापि, अन्य संकेतक, जैसे सकल घरेलू उत्पाद में ऋण का अनुपात बढ़कर 16.4 प्रतिशत, सकल घरेलू उत्पाद में अल्पावधिक ऋण 1.3 प्रतिशत, कुल ऋण में अल्पावधिक ऋण का अनुपात 7.7 प्रतिशत और विदेशी मुद्रा परिसंपत्तियों में अल्पावधिक ऋण का अनुपात 6.2 प्रतिशत हो गया।

1.3 अन्य ऋण ग्रस्त देशों की तुलना में, भारत के विदेशी ऋण की स्थिति सन्तुलित रही, जैसाकि विश्व बैंक की ग्लोबल डेवलपमेंट फाइनेंस (जीडीएफ), 2007 से पता चलता है। भारत की सकल राष्ट्रीय आय में ऋण का अनुपात 2005 में 15.4 प्रतिशत के स्तर पर चीन के बाद दूसरा सबसे कम अनुपात था। शीर्ष दस ऋणी देशों में, भारत ने 1990 और 2005 के बीच सबसे कम विदेशी ऋण वृद्धि दर्ज की। भारत के विदेशी ऋण पोर्टफोलियो में रियायत का घटक सबसे अधिक था। इसके अलावा, 2005 में विदेशी मुद्रा भंडार के संदर्भ में भारत का अल्पावधिक ऋण अनुपात शीर्ष दस ऋणी देशों में सबसे कम था। विकासशील देशों की श्रेणी में, विदेशी ऋण के स्तर के संदर्भ में भारत का स्थान सातवां था।

1.4 पिछले कुछ वर्षों के दौरान विदेशी ऋण शोधन अनुपात में गिरावट का रूख रहा है जिसका कारण ऋण शोधन अदायगियों में आया सन्तुलन और विदेशी चालू प्राप्तियों में विस्तार होना रहा है। कुल ऋण शोधन भुगतान पिछले वर्ष के 19.6 बिलियन अमरीकी डालर से गिरकर 2006-07 में 11.8 बिलियन अमरीकी डालर के स्तर पर आ गए। जहां ऋण शोधन अनुपात वर्ष के दौरान थोड़ा कम हुआ वहीं चालू प्राप्तियों के प्रति ब्याज अदायगियों का अनुपात भी 2005-06 के 2.7 प्रतिशत से गिरकर 1.8 प्रतिशत हो गया।

1.5 विदेशी सहायता के अन्तर्गत सरकारी खाते पर बकाया ऋण वर्ष 2002 से 41 बिलियन अमरीकी डालर और 47 बिलियन अमरीकी डालर के बीच रहा है। सकल घरेलू उत्पाद में कुल सरकारी ऋण मार्च-अन्त 2002 के 9.1 प्रतिशत से तेज़ी से गिरता हुआ मार्च-अन्त, 2007 में 5.3 प्रतिशत पर आ गया, जबकि कुल सरकारी ऋण की संपूर्ण राशि इसी अवधि में 43.6 बिलियन अमरीकी डालर से बढ़कर 48.6 बिलियन अमरीकी डालर हो गई। सरकारी गारंटी-प्राप्त विदेशी ऋण जो पिछले कुछ वर्षों से गिर रहा था, मार्च-अन्त, 2006 के 6096 मिलियन अमरीकी डालर से मामूली सा बढ़ता हुआ मार्च-अन्त, 2007 में 6,107 मिलियन अमरीकी डालर हो गया। तथापि, कुल ऋण के प्रतिशत के रूप में, सरकारी ऋण और सरकारी गारंटी-प्राप्त ऋण में निरन्तर गिरावट देखी गई है जो मार्च-अन्त, 2002 के 51.2 प्रतिशत से कम होकर मार्च-अन्त, 2006 में 40.6 प्रतिशत तथा मार्च-अन्त, 2007 तक और गिरकर 35.3 प्रतिशत हो गया।

1.6 वर्ष 2006-07 के दौरान, विदेशी ऋण सांख्यिकी के संकलन और विश्लेषण में सुधार लाने के लिए और सम्मिलित प्रयास किए गए ताकि बेहतर प्रबंधन सूचना प्रणाली सुनिश्चित की जा सके। ऋण सांख्यिकी के संग्रहण में सभी प्रमुख यूनिटें कामनवेल्थ सैक्रेटेरिएट-डेट रिकार्डिंग और मैनेजमेंट सिस्टम (सीएस-डीआरएमएस) का प्रयोग करती हैं जो राष्ट्रमंडल सचिवालय, लंदन द्वारा तैयार किया गया एक सॉफ्टवेयर पैकेज है। विदेशी ऋण सांख्यिकी के प्रस्तुतीकरण और प्रसार में लगातार सुधार करने से ही भारत के लिए नवम्बर, 2006 में विश्व बैंक के त्रैमासिक विदेशी ऋण सांख्यिकी (क्यूईडीएस-क्वार्टरली एक्सटर्नल डेट स्टैटिस्टिक्स) में शामिल होना संभव हो पाया।

1.7 भारत सरकार ने एक सजग विदेशी ऋण नीति का पालन करना जारी रखा है ताकि विदेशी ऋण को नियंत्रणीय सीमाओं में रखा जा सके। रियायती दरों पर और कम महंगे स्रोतों से लम्बी परिपक्वता अवधि वाले सरकारी ऋण जुटाना, अल्पावधिक ऋण को मॉनिटर करना तथा ऋण सृजित न करने वाले प्रवाहों को बढ़ावा देना मौजूदा विदेशी नीति के महत्वपूर्ण घटक हैं।

2. विदेशी ऋण[1]

2.1 प्रस्तावना

2.1.1 वर्ष 1991 में शुरू किए गए आर्थिक सुधार ऋण सृजित न करने वाले प्रवाहों के पक्ष में नीतिगत परिवर्तन के द्योतक थे। इसके परिणामस्वरूप भारत के विदेशी ऋण की स्थिति में क्रमिक सुधार देखा गया जो सुधार शुरू होने के बाद की अवधि में वर्षानुवर्ष ऋण की वहनीयता के संकेतकों की मज़बूती में परिलक्षित होता है। भारत के विदेशी ऋण का मौजूदा स्तर नियंत्रणीय सीमाओं में है जैसाकि सकल घरेलू उत्पाद में ऋण और ऋण शोधन अनुपात तथा विदेशी ऋण को प्राप्त विदेशी मुद्रा कवर जैसे ऋण वहनीयता संकेतकों से मापा गया है।

2.2 विदेशी ऋण स्टाक

2.1.2 मार्च-अन्त, 2007 में भारत का विदेशी ऋण स्टाक 155.0 बिलियन अमरीकी डालर के स्तर पर था (सारणी 2.1)। इस वित्तीय वर्ष में 28.5 बिलियन अमरीकी डालर के ऋण का संचय 22.6 प्रतिशत की वृद्धि का द्योतक है, अब तक की तीव्रतम वार्षिक वृद्धि रही है। तथापि, वर्ष के दौरान ऋण में हुई इस वृद्धि का लगभग 10 प्रतिशत मूल्यन परिवर्तन के कारण हुआ कहा जा सकता है जो मुख्य अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राओं और भारतीय रुपये की तुलना में अमरीकी डालर के कमज़ोर पड़ने को प्रतिबिम्बित करता है। अमरीकी डालर के मुकाबले रुपये के मूल्य में हुई वृद्धि के कारण ही अनिवार्यतया वर्ष 2006-07 में भारत के विदेशी ऋण की वृद्धि डालर मूल्य की तुलना में रुपये मूल्य में अपेक्षाकृत कम रही। रुपये मूल्य के संदर्भ में, मार्च-अन्त, 2007 में भारत का विदेशी ऋण 675,857 करोड़ रुपये था जो मार्च-अन्त, 2006 के 564,553 करोड़ रुपये के स्तर में 19.7 प्रतिशत की वृद्धि दर्शाता है। अनुबंध-I से अनुबंध IV में वर्ष 1990 से वार्षिक और त्रैमासिक आधार पर, अमरीकी डालर तथा रूपये मूल्य में भारत के विदेशी ऋण के आंकड़े दिए गए हैं।

सारणी 2.1 :भारत का बकाया विदेशी ऋण

	मार्च के अंत में								
श्रेणी	1991	1996	2001	2002	2003	2004	2005सं.	2006सं.	2007त्व.अ
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
				(मिलियन अमरीकी डालर)					
दीर्घावधिक ऋण	75,257	88,696	97,698	96,098	100,245	107,214	116,631	117,779	143,062
अल्पावधिक ऋण	8,544	5,034	3,628	2,745	4,669	4,431	7,529	8,696	11,971
कुल विदेशी ऋण	83,801	93,730	101,326	98,843	104,914	111,645	124,160	126,475	155,033
				(करोड़ रुपये)					
दीर्घावधिक ऋण	146,226	304,091	455,706	468,932	476,624	471,827	510,629	525,764	623,669
अल्पावधिक ऋण	16,775	16,637	16,919	13,396	22,180	19,251	32,922	38,789	52,188
कुल विदेशी ऋण	163,001	320,728	472,625	482,328	498,804	491,078	543,551	564,553	675,857

संः संशोधित; त्व. अ.: त्वरित अनुमान

2.2.2 घटकों के संदर्भ में, मार्च-अन्त, 2006 और मार्च-अन्त, 2007 के बीच ऋण स्टाक में हुई वृद्धि मुख्यतया वाणिज्यिक उधारों में हुई 15,878 मिलियन अमरीकी डालर, अनिवासी भारतीय जमाराशियों में 4,490 मिलियन अमरीकी डालर, अल्पावधिक ऋण में 3,275 मिलियन डालर तथा बहुपक्षीय ऋण में 3,082 मिलियन अमरीकी डालर की वृद्धि के कारण हुई थी सारणी 2.2। वर्ष के दौरान विदेशी ऋण में हुई वृद्धि का 89 प्रतिशत दीर्घावधिक ऋण के कारण और लगभग 11 प्रतिशत अल्पावधिक ऋण के कारण था। दीर्घावधिक ऋण के तहत, वर्ष के दौरान भारतीय कारपोरेटों द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय पूंजी बाज़ारों से अधिक धन जुटाने के कारण वाणिज्यिक उधारों के तहत बकाया राशि में लगभग 59 प्रतिशत की वृद्धि हुई। वाणिज्यिक उधारों के लिए अधिक कारपोरेट मांग को पूरा करने के लिए, वाणिज्यिक उधारों के अनुमोदनों पर लगाई गई उच्चतम सीमा 2005-06 के 16 बिलियन अमरीकी डालर के स्तर से बढ़ाकर 2006-07 में 22 बिलियन अमरीकी डालर कर दी गई। 2006-07 के दौरान अनिवासी भारतीय जमाराशियों में आया उछाल अंशतः अनिवासी भारतीयों द्वारा ब्याज दर अन्तरपणन के कारण अपनी जमा पूंजी को भारतीय बैंकिंग प्रणाली में जमाराशियों के रूप में रखने को तरजीह देने के कारण था। अनिवासी विदेशी रुपया खाता के अन्तर्गत अनिवासी जमाराशियों के तहत कुल अन्तर्वाह 3,895 मिलियन अमरीकी डालर थे। रुपये की मूल्य वृद्धि ने न सिर्फ अनिवासी भारतीय

[1] *किसी भी समय विशेष पर सकल विदेशी ऋण को इस प्रकार परिभाषित किया जाता है। ''आकस्मिक नहीं बल्कि वास्तविक मौजूदा देनदारियों की बकाया राशि जिसके लिए मूलराशि और/अथवा ब्याज की अदायगी उधारकर्ता द्वारा भविष्य में कभी की जाना अपेक्षित हो और जो किसी अर्थव्यवस्था के निवासियों द्वारा अनिवासियों को देय हो।'' (एक्सर्टनल डेट स्टैटिस्टिक्स - गाइड फॉर कम्पाइलर्स एण्ड यूजर्स 2003 आईएमएफ)। जहां दीर्घावधिक ऋण को एक वर्ष से अधिक की परिपक्वता वाले विदेशी ऋण के रूप में परिभाषित किया जाता है, वहीं अल्पावधिक ऋण को एक वर्ष या कम की परिपक्वता वाले ऋण के रूप में परिभाषित किया जाता है। भारत के विदेशी ऋण के आंकड़े अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष द्वारा निर्धारित परिभाषा के आधार पर संकलित किए जाते हैं।*

जमाराशियों के अन्तर्वाह को प्रेरित ही किया बल्कि एनआर (ई) आर ए के तहत बकाया राशियों को भी प्रभावित किया। 1 अप्रैल 2006 से 31 मार्च 2007 के बीच अमरीकी डालर की तुलना में रुपये के मूल्य में 2.3 प्रतिशत की बिन्दु-दर-बिन्दु वृद्धि ने अमरीकी डालर मूल्य के संदर्भ में एनआर (ई) आर ए के तहत बकाया राशियों में आधे बिलियन अमरीकी डालर से कुछ अधिक की वृद्धि कर दी। वर्ष के दौरान अधिक आयातों के स्तर विशेषकर तेल आयातों के कारण अल्पावधिक ऋण में तीव्र वृद्धि देखी गई। कुल आयातों के प्रति अल्पावधिक ऋण का अनुपात 2005-06 के 5.5 प्रतिशत से बढ़कर 2006-07 में 6.2 प्रतिशत हो गया।

सारणी 2.2: भारत का विदेशी ऋण

(मिलियन अमरीकी डालर)

क्रम सं.	घटक	मार्च के अंत में			परिवर्तन (निरपेक्ष)	
		2007 त्व.अ.	2006 सं.	2005 सं.	मार्च 06 से मार्च 07 (3-4)	मार्च 05 से मार्च 06 (4-5)
1	2	3	4	5	6	7
1	बहुपक्षीय	35,641	32,559	31,698	3,082	861
2	द्विपक्षीय	16,104	15,734	17,011	370	-1,277
3	अ.मु.कोष	0	0	0	0	0
4	निर्यात ऋण	6,964	5,419	5,021	1,545	398
5	वाणिज्यिक उधार	42,780	26,902	27,857	15,878	-955
6	एन.आर.आई.जमा राशियां(दीर्घावधिक)	39,624	35,134	32,743	4,490	2,391
7	रुपया ऋण	1,949	2,031	2,301	-82	-270
8	अल्पावधिक ऋण	11,971	8,696	7,529	3,275	1,167
9	**कुल विदेशी ऋण (1 से 8)**	**155,033**	**126,475**	**124,160**	**28,558**	**2,315**

सं: संशोधित; त्व. अ.: त्वरित अनुमान

2.2.3 अनुपात के संदर्भ में, मार्च-अन्त, 2007 में कुल ऋण में दीर्घावधिक ऋण 92.3 प्रतिशत था और अल्पावधिक ऋण 7.7 प्रतिशत था। दीर्घावधिक ऋण के अन्तर्गत, बहुपक्षीय और द्विपक्षीय ऋण जो विदेशी सहायता कार्यक्रम के तहत जुटाए गए ऋणों को ही मुख्यतया प्रतिबिम्बित करता है, कुल विदेशी ऋण का लगभग 33.4 प्रतिशत हिस्सा थे। अनिवासी भारतीयों के जमा और वाणिज्यिक उधार निर्यात क्रेडिट के साथ मिलकर कुल विदेशी ऋण 57.7 प्रतिशत था। रुपया ऋण का हिस्सा लगभग 1.3 प्रतिशत के स्तर पर रहा (चित्र 2.1)।

चित्र 2.1: मार्च, 2007 के अंत में विदेशी ऋण की संरचना

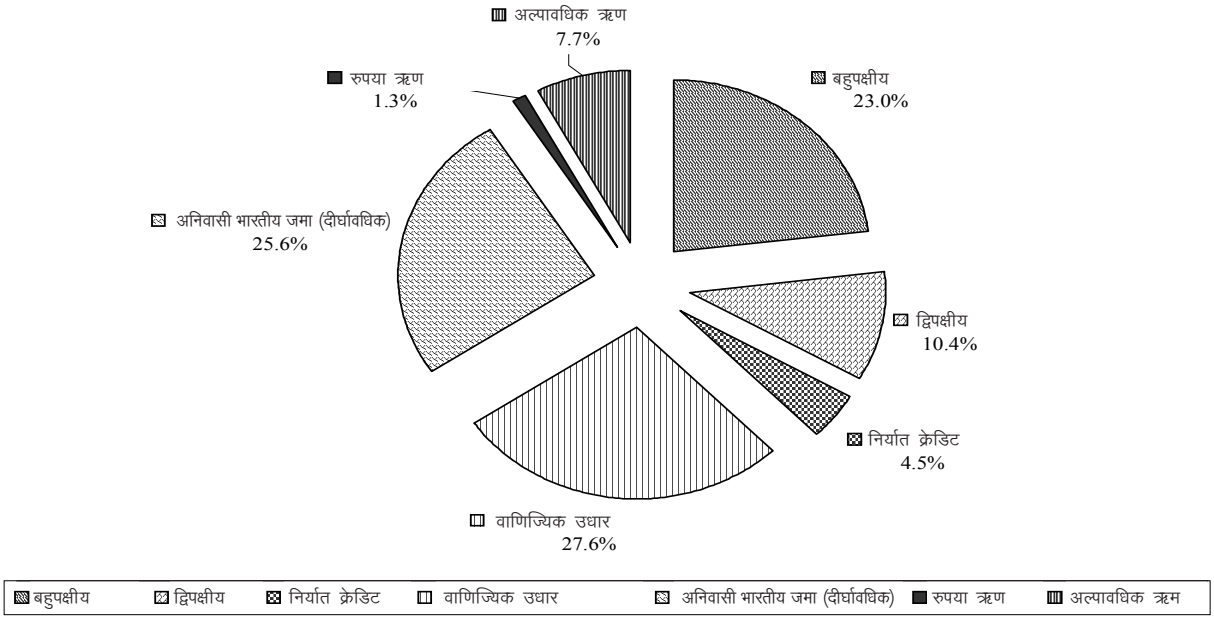

2.2.4 हालांकि 2006-07 के दौरान विदेशी ऋण संपूर्ण अर्थ में बढ़ा, विदेशी ऋण के महत्वपूर्ण संकेतकों में मिश्रित रुख देखा

गया। जहां ऋण शोधन अनुपात, चालू प्राप्तियों के प्रति ऋण के अनुपात और कुल ऋण में विदेशी मुद्रा भण्डार के अनुपात में वर्ष के दौरान सुधार हुआ, वहीं अन्य संकेतक जैसे सकल घरेलू उत्पाद में विदेशी ऋण के अनुपात, कुल ऋण में रियायती ऋण का हिस्सा, कुल ऋण में अल्पावधिक ऋण के अनुपात, सकल घरेलू उत्पाद में विदेशी मुद्रा परिसंपत्तियों के अनुपात में मामूली गिरावट देखी गई (सारणी 2.3)।

सारणी 2.3 : मुख्य विदेशी ऋण संकेतक

(प्रतिशत)

वर्ष	ऋण शोधन अनुपात	चालू प्राप्तियों के संदर्भ में ऋण का अनुपात	कुल ऋण के संदर्भ में विदेशी मुद्रा भंडार का अनुपात	स.घ.उ. के संबंध में कुल विदेशी ऋण का अनुपात	कुल ऋण में रियायती ऋण का अनुपात	विदशी मुद्रा परिसम्पत्तियों के प्रति अल्पावधिक ऋण का अनुपात	स.घ.उ. के संबंध में अल्पावधिक ऋण का अनुपात	कुल ऋण में अल्पावधिक ऋण का अनुपात
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1990-91	35.3	328.9	7.0	28.7	45.9	382.1	3.0	10.2
1991-92	30.2	312.3	10.8	38.7	44.8	125.6	3.2	8.3
1992-93	27.5	323.4	10.9	37.5	44.5	98.5	2.7	7.0
1993-94	25.4	275.6	20.8	33.8	44.4	24.1	1.3	3.9
1994-95	25.9	235.8	25.4	30.8	45.3	20.5	1.3	4.3
1995-96	26.2	188.9	23.1	27.0	44.7	29.5	1.4	5.4
1996-97	23.0	169.6	28.3	24.6	42.2	30.1	1.8	7.2
1997-98	19.5	159.8	31.4	24.3	39.5	19.4	1.3	5.4
1998-99	18.7	162.1	33.5	23.6	38.5	14.5	1.0	4.4
1999-00	17.1	145.6	38.7	22.0	38.9	11.2	0.9	4.0
2000-01	16.6	130.8	41.7	22.5	35.4	9.2	0.8	3.6
2001-02	13.7	122.1	54.7	21.1	35.9	5.4	0.6	2.8
2002-03	16.0*	110.2	72.5	20.3	36.8	6.5	0.9	4.5
2003-04	16.1**	93.6	101.2	17.8	36.1	4.1	0.7	4.0
2004-05सं.	6.0^	81.0	114.0	17.4	33.1	5.6	1.1	6.1
2005-06सं.	9.9#	64.3	119.9	15.8	31.2	6.0	1.1	6.9
2006-07त्व.अ.	4.8	63.1	128.5	16.4	25.7	6.2	1.3	7.7

* 3,430 मिलियन अमरीकी डालर की समय पूर्व अदायगी को शामिल न करते हुए 12.4% बैठता है।

** 3,797 मिलियन अमरीकी डालर की समय पूर्व अदायगी और 5549 मिलियन अमरीकी डालर के रिसर्जेंट इंडिया बांडों (आरआईबी) के मोचन को शामिल न करते हुए 8.2% बैठता है।

^ 381 मिलियन अमरीकी डालर की समय पूर्व अदायगी को शामिल न करते हुए 5.7% बैठता है।

\# इंडिया मिलेनियम डिपाजिट के 7.1 बिलियन अमरीकी डालर की अदायगी और 23.5 मिलियन डालर की समयपूर्व अदायगी को शामिल न करते हुए 6.3% बैठता है।

सं: संशोधित; त्व. अ.: त्वरित अनुमान

2.2.5 दसवीं पंचवर्षीय योजनावधि (2002-07) के दौरान विदेशी ऋण में 56.2 बिलियन अमरीकी डालर (57 प्रतिशत) की वृद्धि किसी भी योजनावधि में हुई सर्वाधिक वृद्धि थी (सारणी 2.4)। इसमें से, 12.2 बिलियन अमरीकी डालर की लगभग 22 प्रतिशत की वृद्धि मूल्यन परिवर्तन के कारण थी जो अमरीकी डालर के मूल्य-ह्रास को दर्शाती है। तथापि, दसवीं पंचवर्षीय योजनावधि में डॉलर मूल्य में विदेशी ऋण में 57 प्रतिशत के स्तर पर हुई वृद्धि चालू बाज़ार मूल्यों पर सकल घरेलू उत्पाद की 91 प्रतिशत की वृद्धि की तुलना में कम थी। रुपये मूल्य में भारत के विदेशी ऋण में लगभग 40 प्रतिशत वृद्धि हुई और सकल घरेलू उत्पाद में 81 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

सारणी 2.4 : दसवीं पंचवर्षीय योजनावधि के दौरान विदेशी ऋण

(मिलियन अमरीकी डालर)

मार्च-अन्त	विदेशी ऋण	वार्षिक वृद्धि
1	2	3
2002	98,843	
2003	1,04,914	6,071
2004	1,11,645	6,731
2005 सं	1,24,160	12,515
2006 सं	1,26,475	2,315
2007 त्व.अ.	1,55,033	28,558
दसवीं योजनावधि के दौरान ऋण में वृद्धि		56,190

सं: संशोधित; त्व. अ.: त्वरित अनुमान

2.2.6 इसके अलावा, जहां दसवीं पंचवर्षीय योजनावधि के दौरान विदेशी ऋण स्टाक में तीव्र वृद्धि हुई, वहीं निवल अन्तर्राष्ट्रीय देनदारियां जो सकल अन्तर्राष्ट्रीय देनदारियों (ऋण और ऋण-भिन्न दोनों) तथा अन्तर्राष्ट्रीय परिसम्पत्तियों के बीच अन्तर की द्योतक हैं, में वर्ष 2002 और 2006 (ऐसा वर्ष जिसके संबंध में नवीनतम अन्तर्राष्ट्रीय निवेश स्थिति संबंधी आंकड़े उपलब्ध हैं) के बीच भारत के विदेशी मुद्रा भण्डारों में वृद्धि के कारण 23 बिलियन अमरीकी डालर या 33 प्रतिशत की उल्लेखनीय गिरावट हुई जो मुख्यतया भारत के विदेशी मुद्रा भण्डार में वृद्धि के कारण थी (सारणी 2.5)। यह भी देखा गया है कि 1991-92 से 2006-07 के दौरान ऋण सृजित करने वाले प्रवाह (विदेशी सहायता ऋण, विदेशी वाणिज्यिक उधार, और अनिवासी भारतीय जमाराशियां) 80.7 बिलियन अमरीकी डालर थे जो इस अवधि में भण्डार में हुई 193.4 बिलियन अमरीकी डालर की वृद्धि के आधे से भी कम थे।

सारणी 2.5 भारत की अन्तर्राष्ट्रीय निवेश-स्थिति

(बिलियन अमरीकी डालर)

क्रम सं.	परिसम्पत्तियां/देनदारियां	मार्च-अन्त					
		2001	2002	2003	2004	2005सं.	2006त्व.अ
1	2	3	4	5	6	7	8
क	**परिसंपत्तियां**	**62.47**	**73.62**	**95.59**	**137.78**	**168.9**	**183.13**
	1. विदेश में प्रत्यक्ष निवेश	2.62	4.01	5.83	7.76	10.11	12.07
	2. पोर्टफोलियो निवेश	0.51	0.65	0.78	0.76	0.81	1.29
	3. वित्तीय व्युत्पाद						
	4. अन्य निवेश	16.46	14.24	12.88	16.31	16.48	18.15
	5. प्रारक्षित परिसंपत्तियां	42.90	54.72	76.10	112.96	141.51	151.62
ख	**देनदारियां**	**138.63**	**142.74**	**156.05**	**183.12**	**209.22**	**229.20**
	1. संबंधित अर्थव्यवस्था में प्रत्यक्ष निवेश	20.33	25.42	31.22	38.18	43.59	50.26
	2. पोर्टफोलियो निवेश	31.30	31.54	32.41	43.70	55.28	63.36
	3. अन्य निवेश	87.01	85.78	92.42	101.25	110.34	115.58
	क. व्यापार क्रेडिट	4.88	3.83	4.88	6.28	9.56	10.54
	ख. ऋण	63.99	62.72	61.05	61.87	65.76	67.77
	ग. मुद्रा और जमाराशियां	17.81	18.51	25.57	32.18	33.64	36.16
	अन्य देनदारियां	0.33	0.72	0.92	0.92	1.39	1.11
ग	**निवल परिसम्पत्तियां (+)/ निवल देनदारियां (-)**	**-76.15**	**-69.12**	**-60.46**	**-45.27**	**-40.31**	**-46.07**

सं: संशोधित; त्व. अ.: त्वरित अनुमान स्रोत : भारतीय रिज़र्व बैंक

2.3 विदेशी ऋण और सकल घरेलू उत्पाद

2.3.1 सकल घरेलू उत्पाद के संदर्भ में विदेशी ऋण का अनुपात जिसमें सुधार शुरु होने के बाद के समय में गिरावट का रुख देखा जा रहा था, जो सकल घरेलू उत्पाद की तुलना में विदेशी ऋण के कहीं कम दर पर बढ़ने के परिणामस्वरूप था, में मामूली वृद्धि दर्ज की गई जब वह 2005-06 में 15.8 प्रतिशत के स्तर से बढ़कर 2006-07 में 16.4 प्रतिशत हो गया (चित्र 2.2)।

चित्र 2.2 सकल घरेलू उत्पाद और विदेशी ऋण की वृद्धि दर तथा सकल घरेलू उत्पाद के प्रति विदेशी ऋण का अनुपात

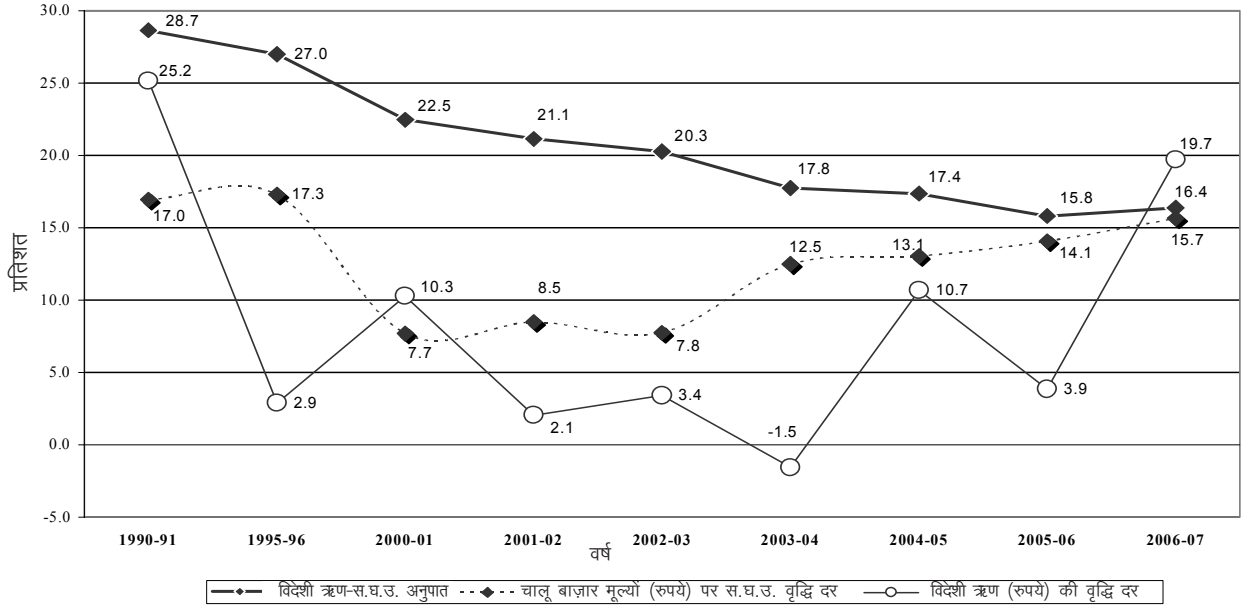

2.4 विदेशी ऋण और विदेशी मुद्रा परिसंपत्तियां

2..4.1 भारत के विदेशी मुद्रा भण्डार जिनमें भारतीय रिज़र्व बैंक की विदेशी मुद्रा परिसंपत्तियां, स्वर्ण, विशेष आहरण अधिकार (एसडीआर) और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष में प्रारक्षित ट्रांश स्थिति शामिल है, मार्च 2007 के अन्त में 199.2 बिलियन अमरीकी डालर के स्तर पर थीं और विदेशी ऋण को 128.5 प्रतिशत का कवर मुहैया कर रही थीं। तथापि, भारतीय रिज़र्व बैंक की विदेशी मुद्रा परिसंपत्तियां जो 191.92 बिलियन अमरीकी डालर के स्तर पर थीं, कुल विदेशी ऋण स्टाक को 124 प्रतिशत का कवर मुहैया करा रहीं थीं। यह कवर विदेशी मुद्रा परिसंपत्तियों द्वारा विदेशी ऋण को दिए गए मार्च, 1991 के अन्त में 3 प्रतिशत से थोड़े से कम कवर की तुलना में बहुत अधिक था (चित्र 2.3)। विदेशी ऋण को प्राप्त विदेशी मुद्रा के इस कवर में हुआ यह क्रमिक सुधार इंगित करता है कि भारतीय रिज़र्व बैंक की विदेशी मुद्रा परिसंपत्तियां मुख्यतया ऋण सृजित करने वाले प्रवाहों से इतर अन्य कारकों से निर्मित की गई थीं।

चित्र 2.3 : कुल विदेशी ऋण की तुलना में विदेशी मुद्रा परिसंपत्तियों का अनुपात

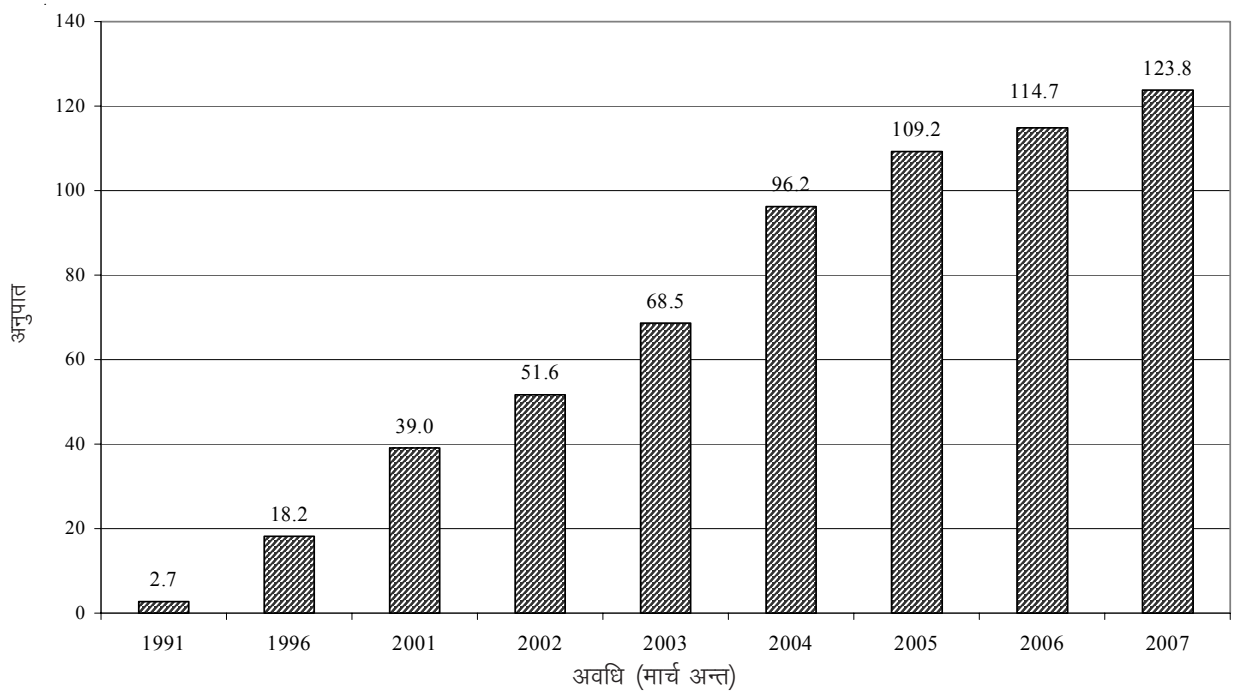

2.5 अन्तर्राष्ट्रीय तुलना

(क) विदेशी ऋण को विदेशी मुद्रा भण्डार का कवर

2.5.1 विदेशी ऋण को विदेशी मुद्रा भण्डार द्वारा मुहैया कराए गए कवर के संदर्भ में ग्लोबल डेवलपमेंट फाइनेंस, 2007, विश्व बैंक के अनुसार 2005 में भारत का शीर्ष दस ऋणी देशों में लगभग 112 प्रतिशत के स्तर पर दूसरा सर्वाधिक कवर था। चीन का कवर 295 प्रतिशत के स्तर पर सर्वाधिक था (चित्र 2.4)।

चित्र 2.4 : अन्तर्राष्ट्रीय तुलना - शीर्ष दस ऋणी देशों के विदेशी ऋण को प्राप्त विदेशी मुद्रा का कवर, 2005

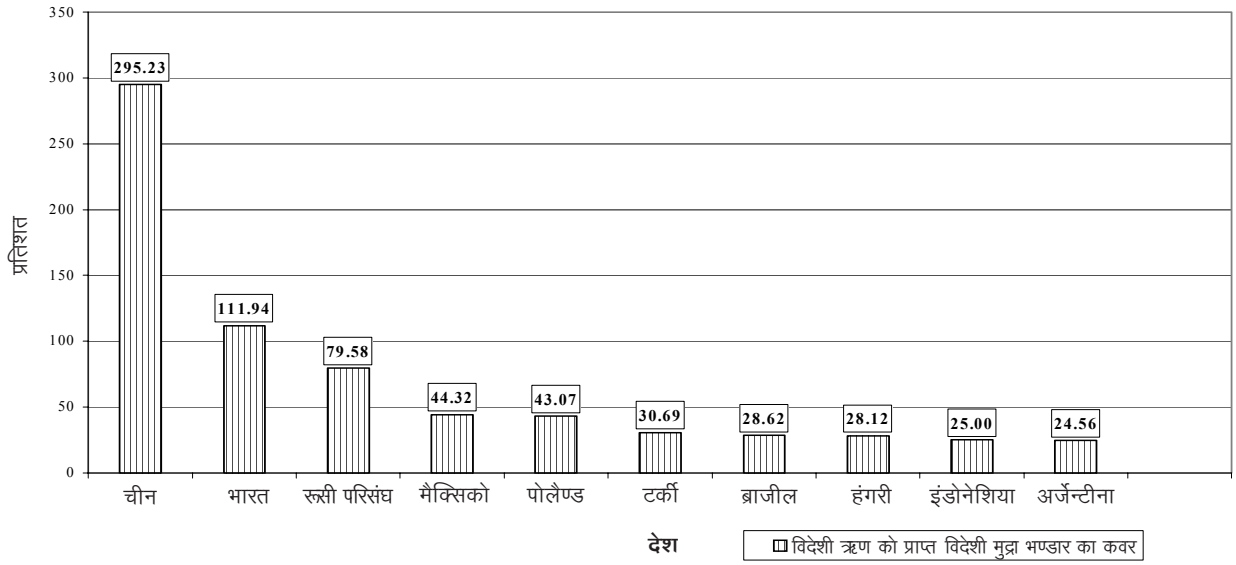

स्रोतः ग्लोबल डेवलपमेंट फाइनेंस, 2007, विश्व बैंक

(ख) विदेशी ऋण स्टाक

2.5.2 विकासशील विश्व के शीर्ष दस ऋणी देशों में भारत 1991 के तीसरे स्थान से अपनी स्थिति सुधारकर 1995 में आठवें स्थान पर पहुंच गया। तथापि, 2005 में भारत फिसलकर सातवें स्थान पर पहुंच गया (अनुबंध V)।

2.5.3 सकल राष्ट्रीय आय (जीएनआई) के प्रति भारत का जो ऋण अनुपात वर्ष 2005 में 15.4 प्रतिशत था, चीन के 12.5 प्रतिशत के अनुपात के बाद दूसरा सबसे कम अनुपात था (सारणी 2.6)।

सारणी 2.6 : अन्तर्राष्ट्रीय तुलना - विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में शीर्ष दस ऋणी देश, 2005

क्रम सं.	देश	कुल विदेशी ऋण (मिलियन अमरीकी डालर)	जीएनआई की तुलना में ऋण (अनुपात प्रतिशत के रुप में)
1	2	3	4
1	चीन	281,612	12.5
2	रुसी परिसंघ	229,042	30.7
3	ब्राजील	187,994	24.4
4	टर्की	171,059	47.3
5	मैक्सिको	167,228	22.1
6	इंडोनेशिया	138,300	49.7
7	**भारत**	**123,123**	**15.4**
8	अर्जेन्टीना	114,335	64.6
9	पौलैंड	98,821	33.8
10	हंगरी	66,119	64.5

जीएनआईः सकल राष्ट्रीय आय; स्रोतः ग्लोबल डेवलपमेंट फाइनेंस,2007, विश्व बैंक

(ग) ऋण स्टाक में परिवर्तन :

2.5.4 विश्व बैंक के ग्लोबल डेवलपमेंट फाइनेंस (जीडीएफ) 2007 के अनुसार, वर्ष 1990 और 2005 के बीच, शीर्ष दस विकासशील ऋणी देशों में, भारत ने 39.5 बिलियन अमरीकी डालर की सबसे कम वृद्धि दर्ज की। यह अन्य ऋणी देशों की स्थिति

के ठीक विपरीत है क्योंकि उनमें से कुछ देशों ने इस अवधि में अपने ऋण स्टाक में दोगुने से अधिक वृद्धि कर दी (चित्र 2.5)।

चित्र 2.5 : 1990 और 2005 के बीच विदेशी ऋण में हुई वृद्धि की अंतर्राष्ट्रीय तुलना

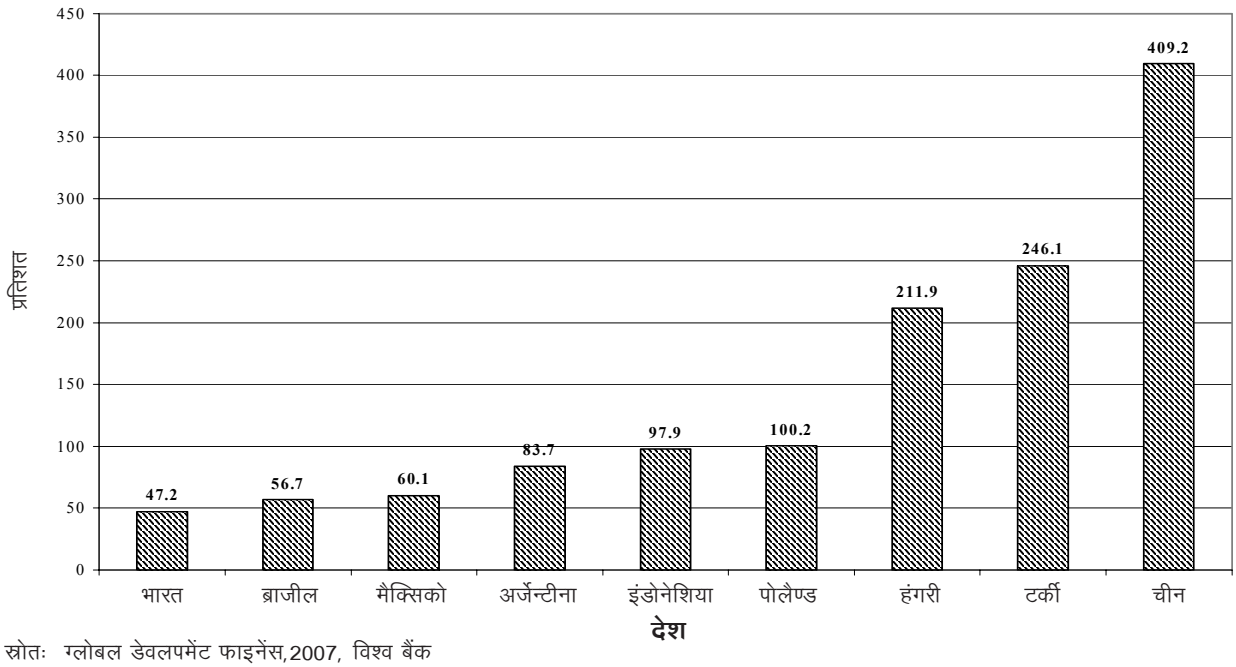

स्रोतः ग्लोबल डेवलपमेंट फाइनेंस,2007, विश्व बैंक

(घ) विदेशी ऋण का वर्तमान मूल्य

2.5.5 वर्तमान मूल्य (व.मू.) जो विदेशी ऋण पोर्टफोलियो में रियायत के घटक को प्रतिबिम्बित करता है, ऋणग्रस्तता का उपयोगी माप है। देशों के बीच तुलना तब सार्थक हो जाती है जब विदेशी ऋण का अंकित मूल्य ऋण के वर्तमान मूल्य में रुपांतरित किया जाता है। विदेशी ऋण का वर्तमान मूल्य निजी ऋणों के लिए ऋण शोधन भुगतान के भावी प्रवाह को छूट देकर और ऐसे सभी ऋणों के लिए वर्तमान मूल्य का योग करके आकलित किया जाता है।

2.5.6 भारत के संबंध में, 2005 में विदेशी ऋण का वर्तमान मूल्य 110.6 बिलियन अमरीकी डालर था, जबकि निरपेक्ष अर्थ में उसी वर्ष ऋण स्टाक 123.1 बिलियन अमरीकी डालर था जो रियायती ऋण के बड़े घटक को प्रतिबिम्बित करता है। वस्तुतः भारत के रियायती ऋणों का घटक शीर्ष दस ऋणी देशों में सर्वाधिक है। भारत की स्थिति (i) सकल राष्ट्रीय आय के प्रति विदेशी ऋण के 16 प्रतिशत के स्तर पर वर्तमान मूल्य के अनुपात और (ii) वस्तु एवं सेवाओं के निर्यात (एक्सजीएस) के संदर्भ में विदेशी ऋण के वर्तमान मूल्य के 73 प्रतिशत के अनुपात दोनों ही अर्थों में बेहतर है जो चीन के बाद दूसरा सबसे कम मूल्य बैठता है (सारणी 2.7)।

2.5.7 वर्ष 2005 की प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय आय के आधार पर विश्व बैंक ने अलग-अलग देशों को इस प्रकार वर्गीकृत किया है (i) 'निम्न आय के देश' जिनकी प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय आय 875 अमरीकी डालर से कम है, (ii) 'मध्य आय के देश' जिनकी प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय आय 876 अमरीकी डालर और 10,725 अमरीकी डालर के बीच थी और (iii) 'उच्च आय के देश' जिनकी प्रति व्यक्ति सकल राष्ट्रीय आय 10,275 अमरीकी डालर से अधिक थी। जहां शीर्ष दस ऋणी देशों की श्रेणी में बाकी नौ देशों को 'मध्य आय' के देशों के रूप में वर्गीकृत किया गया था, वहीं भारत को 'निम्न आय' के देश के रूप में वर्गीकृत किया गया है।

सारणी 2.7 : अन्तर्राष्ट्रीय तुलना - ऋण का वर्तमान मूल्य और आय वर्गीकरण, 2005

क्रम सं.	देश	ऋण का वर्तमान मूल्य (मिलियन अमरीकी डालर)	ऋण/सकल राष्ट्रीय आय के वर्तमान मूल्य का अनुपात (प्रतिशत)*	ऋण का वर्तमान मूल्य/ एक्सजीएस का अनुपात (प्रतिशत)*	आय वर्गीकरण
1	2	3	4	5	6
1	चीन	275,534	14	40	मध्य
2	रूसी परिसंघ	230,298	40	104	मध्य
3	ब्राजील	209,559	34	183	मध्य
4	टर्की	177,626	59	195	मध्य
5	मैक्सिको	178,876	26	79	मध्य
6	इंडोनेशिया	138,508	55	159	मध्य
7	**भारत**	**110,647**	**16**	**73**	**निम्न**
8	अर्जेन्टीना	107,913	73	245	मध्य
9	पौलैण्ड	96,234	39	98	मध्य
10	हंगरी	63,598	69	96	मध्य

* जहां वर्तमान मूल्य वर्ष 2005 से संबंधित है, स.रा.आ. और एक्सजीएस वर्ष 2003 से 2005 तक की अवधि से संबंधित है।

व.मू. : वर्तमान मूल्य, स.रा.आ.: सकल राष्ट्रीय आय, एक्सजीएसः माल एवं सेवाओं का निर्यात

स्रोतः ग्लोबल डेवलपमेंट फाइनेंस,2007, विश्व बैंक

3. अल्पावधिक ऋण

3.1 मूल परिपक्वता के अनुसार अल्पावधिक ऋण

3.1.1 अल्पावधिक ऋण जिसे एक वर्ष अथवा कम अवधि में परिपक्व होने वाली राशि के रूप में परिभाषित किया गया है, की बड़ी राशि का संचयन, अर्थव्यवस्था के लिए बाहरी झटकों से खतरा पैदा करता है। इसके परिप्रेक्ष्य में, वर्तमान में अल्पावधिक ऋण जुटाने की अनुमति सिर्फ सामान्य शर्तों के तहत व्यापार से जुड़े प्रयोजनों के लिए है। इससे भी बढ़कर, अल्पावधिक ऋणों को छः महीने से अधिक आवर्तन की अनुमति नहीं है। भारतीय रिजर्व बैंक प्राधिकृत डीलरों द्वारा प्रस्तुत रिपोर्टों के आधार पर निरंतर अल्पावधिक ऋण के स्टाक को संकलित और मानीटर करता है। पिछले वर्ष के स्तर की तुलना में 2006-07 में अल्पावधिक व्यापार ऋणों में 3.3 बिलियन अमरीकी डालर की वृद्धि गई जब ये 11.97 बिलियन अमरीकी डालर के स्तर पर (37.7 प्रतिशत) जा पहुंचे। ऐसा 2006-07 के दौरान आयातों के उच्च स्तर विशेषकर तेल आयातों के कारण हुआ, फिर भी यह अभी भी उचित सीमाओं के भीतर है।

3.1.2 जैसा कि सारणी 3.1 में दर्शाया गया है, अल्पावधिक ऋण में वर्तमान में सिर्फ व्यापार ऋण शामिल हैं जिसमें मोटे तौर पर 180 दिन से एक वर्ष के क्रेता ऋण तथा आपूर्ति कर्ता ऋण शामिल हैं। 180 दिन से कम परिपक्वता वाले आपूर्तिकर्ता ऋणों को शामिल नहीं किया गया है। अल्पावधिक ऋण के अन्य घटक जैसे अनिवासी भारतीय जमाराशियों के अल्पावधिक घटक को मार्च 2005 के अंत तक पूर्णतया परिसमाप्त कर दिया गया था और विदेशी मुद्रा (बैंक और अन्य) जमाराशियां 1990 के दशक के शुरूआत में बंद कर दी गई थी। चूंकि अल्पावधिक व्यापार ऋण आयात से संबंधित होते हैं, इसलिए कुल आयातों के प्रति बकाया अल्पावधिक व्यापार ऋणों का अनुपात सारणी 3.1 में दिया गया है।

सारणी 3.1 : मूल परिपक्वता के अनुसार अल्पावधिक ऋण

(मिलियन अमरीकी डालर)

घटक	मार्च अन्त								
	1991	1996	2001	2002	2003	2004	2005सं.	2006सं.	2007त्व.अ.
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
क अल्पावधिक ऋण (i+ii+iii)	8,544	5,034	3,628	2,745	4,669	4,431	7,529	8,696	11,971
i) अनिवासी भारतीय जमाराशियां[1]	3,577	2,883	957	968	1,962	304	0	0	0
ii) एफसी(बी एवं ओ) जमाराशियां (एक वर्ष की परिपक्वता तक)	167	0	0	0	0	0	0	0	0
iii) व्यापार ऋण[2]	4,800	2,151	2,671	1,777	2,707	4,127	7,529	8,696	11,971
ख आयात[3] (वर्ष के दौरान)	27,915	43,670	57,912	56,277	64,464	80,003	118,779	156,993	191,995
ग व्यापार का अनुपात आयातों से संबंधित ऋण (%) (ख के प्रतिशत के रूप में)	17.2	4.9	4.6	3.2	4.2	5.2	6.3	5.5	6.2

टिप्पणीः 1. *अनिवासी भारतीय जमा के अल्पावधिक विदेशी ऋण के घटक विदेशी मुद्रा अनिवासी लेखे(एफसीएन आर(ए)), विदेशी मुद्रा अनिवासी बैंक जमा (एफसीएनआर(बी))ः और अनिवासी विदेशी रूपया लेखा, (एनआर(ई)आरए) हैं। मार्च, 2005 के अंत तक, अनिवासी भारतीय जमा के तहत एक वर्ष से कम की परिपक्वता (अल्पावधिक) वाले जमा को पूरी तरह समाप्त कर दिया गया है। विस्तार से, जहां विदेशी मुद्रा अनिवासी लेखा (एफसीएनआर(ए) पर एक वर्ष परिपक्वता से कम के अल्पावधिक जमाओं को 15 मई, 1993 से वापस ले लिया गया था, विदेशी मुद्रा अनिवासी बैंक जमा (एफसीएनआर(बी) और अनिवासी विदेशी रुपया लेखा (एनआर(ई)आरए) के अंतर्गत एक वर्ष से कम की अल्पावधिक जमाराशियां क्रमशः अक्तूबर 1999 और अप्रैल 2003 से वापस ली गई थीं।*

2. *आपूर्तिकर्ता क्रेडिट के संबंध में छह महीने से कम के अल्पावधिक व्यापार ऋण के आंकड़े मार्च, अंत 1994 से उपलब्ध नहीं है।*

3. *भुगतान संतुलन आधार पर* सं: *संशोधित;* त्व.अ.: *त्वरित अनुमान*

3.1.3 वर्ष 2006-07 के दौरान निरपेक्ष अर्थों में अल्पावधिक ऋण में वृद्धि के बावजूद, अल्पावधिक ऋण से संबंधित ऋण वहनीयता के संकेतक निरंतर संतोषजनक स्थिति प्रतिबिंबित कर रहे हैं। कुल ऋण में अल्पावधिक ऋण का अनुपात पिछले वर्षों में गिरा है जो 1991 में 10.2 प्रतिशत से गिरता हुआ मार्चान्त 2002 में 2.8 प्रतिशत हो गया। हालांकि, तत्पश्चात् इसने धीरे-धीरे बढ़ना शुरू किया और मार्चांत, 2007 में 7.7 प्रतिशत पर पहुंच गया। सकल घरेलू उत्पाद के प्रतिशत के रूप में अल्पावधिक ऋण जो 1991 में 3 प्रतिशत था गिरकर मार्चान्त 2002 में 0.6 प्रतिशत पर आ गया परन्तु बढ़कर मार्चान्त 2007 में 1.3 प्रतिशत हो गया। मार्चान्त 2007 में विदेशी मुद्रा परिसंपतियों और विदेशी मुद्रा भंडार की तुलना में अल्पावधिक ऋण के अनुपात क्रमशः 6.2 प्रतिशत और 6 प्रतिशत थे।

3.1.4 चित्र 3.1 ग्लोबल डेवलपमेंट फाइनेंस (जीडीएफ), 2007, विश्व बैंक के आधार पर तैयार किया गया है और यह वर्ष 2005 के संबंध में अन्य ऋणी देशों की तुलना में कुल ऋण में अल्पावधिक ऋण के अनुपात के संदर्भ में भारत की स्थिति दर्शाता है।

चित्र 3.1 : अन्तर्राष्ट्रीय तुलना - कुल विदेशी ऋण में अल्पावधिक ऋण का हिस्सा, 2005

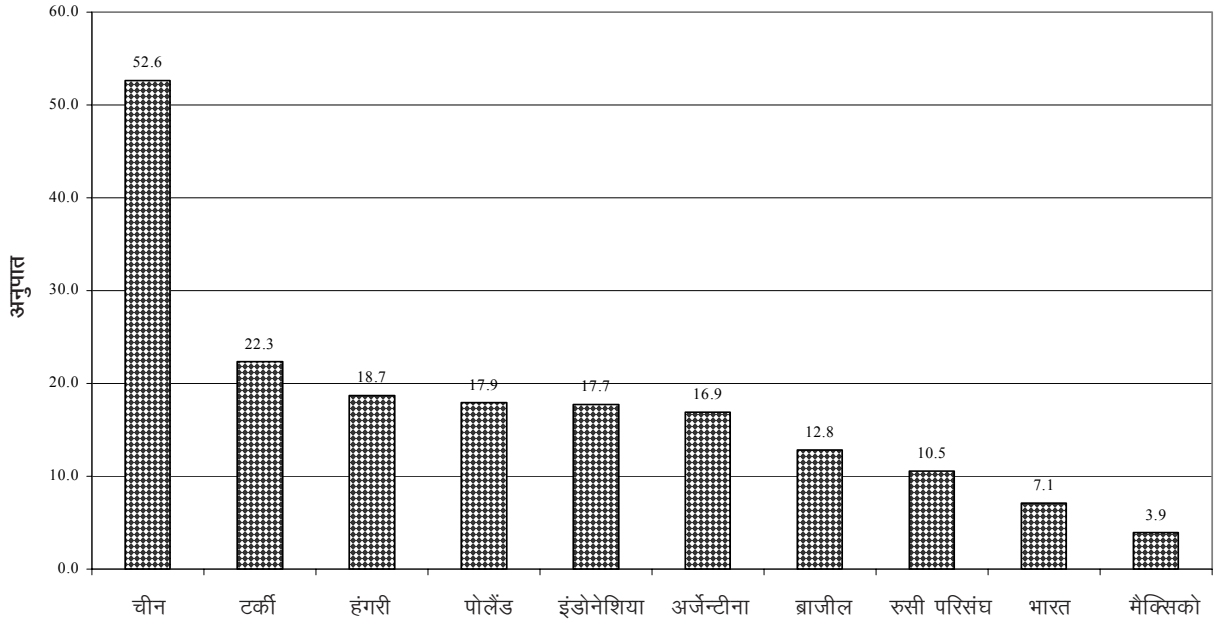

स्रोतः ग्लोबल डेवलपमेंट फाईनेंस, 2007, विश्व बैंक।

टिप्पणी: *अल्पावधिक ऋण के तहत कवरेज सभी देशों में भिन्न-भिन्न है। उदाहरणार्थ, हंगरी 90 दिन से कम के व्यापार ऋणों को शामिल नहीं करता, टर्की एल सी आधारित ऋण और "स्वीकृति ऋणों" को शामिल करता है, भारत 180 दिन से कम के आपूर्तिकर्ता ऋणों को शामिल नहीं करता और चीन केवल 180 दिन से अधिक के तथा 200,000 अमरीकी डालर के विलंबित आयात भुगतानों को शामिल करता है।*

3.1.5 इसी प्रकार, विदेशी मुद्रा भण्डारों के प्रति अल्पावधिक ऋण का अनुपात भारत के संबंध में शीर्ष दस ऋणी देशों में 6.4 प्रतिशत के स्तर पर सबसे कम था (चित्र 3.2)।

चित्र 3.2: अंतर्राष्ट्रीय तुलना-विदेशी मुद्रा भंडार के संबंध में अल्पावधिक ऋण का अनुपात, 2005

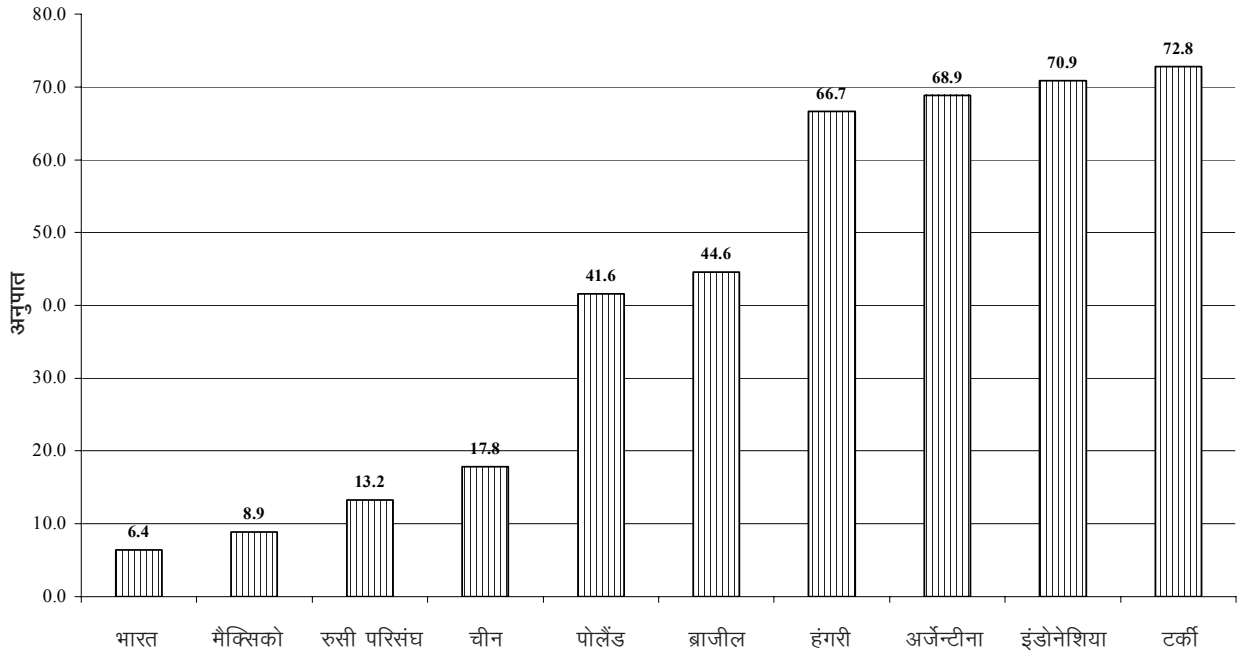

स्रोतः ग्लोबल डेवलपमेंट फाईनेंस, 2007, विश्व बैंक।

3.2 अवशिष्ट परिपक्वता के अनुसार अल्पावधिक ऋण

3.2.1 विदेशी ऋण के आंकड़ों के विश्लेषण हेतु मूल परिपक्वता अथवा अवशिष्ट परिपक्वता पर आधारित आंकड़ों का प्रयोग किया जाना संभव है। मूल परिपक्वता का प्रयोग करने का लाभ यह है कि यह पूंजी प्रवाहों के स्वरूप को समझने में सहायता देती है। दूसरी तरफ, अवशिष्ट परिपक्वता ऋण शोधन अदायगियों की रूपरेखा और विदेशी मुद्रा भंडार पर अनुवर्ती प्रभार को समझने में मदद करती है जिससे नकदी प्रबंधन में सहायता मिलती है। अवशिष्ट परिपक्वता के अनुसार अल्पावधिक ऋण में मध्यावधिक और दीर्घावधिक ऋण तथा एक वर्ष अथवा कम की मूल परिपक्वता वाले अल्पावधिक ऋण के अंतर्गत एक वर्ष की संदर्भ अवधि के दौरान देय मूलधन की वापसी अदायगियां शामिल हैं।

3.2.2 सारणी 3.2 में अवशिष्ट परिपक्वता के अनुसार अल्पावधिक ऋण के अनुमान दिए गए हैं। इनमें ये शामिल नहीं हैं:(i) 180 दिन से कम के आपूर्तिकर्ता ऋण क्योंकि इन्हें हिसाब में लेना इसलिए कठिन है कि सामान्य व्यापार भुगतान 180 दिन के भीतर करने की अनुमति है, (ii) एक वर्ष में परिपक्व हुई अनिवासी भारतीय जमाराशियाँ और (iii) विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआईआई) द्वारा ऋण लिखतों का शोधन।

सारणी 3.2: अवशिष्ट परिपक्वता के अनुसार अल्पावधिक ऋण

(मिलियन अमरीकी डालर)

घटक	मार्च अन्त								
	1991	1996	2001	2002	2003	2004	2005सं.	2006सं.	2007त्व.अ.
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1. मूल परिपक्वता के अनुसार अल्पावधिक ऋण	8,544	5,034	3,628	2,745	4,669	4,431	7,529	8,696	11,971
2. एक वर्ष के भीतर परिपक्व होने वाली दीर्घावधिक ऋण देनदारियां	4,705	8,229	6,776	11,530	14,614	6,117	14,341	7,327	6,938
3. एक वर्ष तक की अवशिष्ट परिपक्वता वाले अल्पावधिक ऋण (1+2)	13,249	13,263	10,404	14,275	19,283	10,548	21,870	16,023	18,909
स.घ.उ. का प्रतिशत	4.2	3.7	2.2	3.0	3.8	1.8	3.1	2.0	2.1
कुल ऋण का प्रतिशत	15.8	14.2	10.3	14.4	18.4	9.4	17.6	12.7	12.2
विदेशी मुद्रा परिसम्पत्तियों का प्रतिशत	592.5	77.8	26.3	28.0	26.8	9.8	16.1	11.0	9.8

टिप्पणी: *मार्च, 2006 के अन्त तक अवशिष्ट परिपक्वता के साथ विदेशी ऋण के आंकड़े वास्तविक हैं। ये मार्च, 2007 के अंत के लिए अनुमानित हैं।*

सं: *संशोधित* त्व.अ. : *त्वरित अनुमान*

4. ऋण स्टॉक का वर्गीकरण

विदेशी ऋण स्टॉक के आंकड़ों को विश्लेषण और प्रस्तुतीकरण के प्रयोजन पर निर्भर करते हुए विभिन्न वर्गों में बांटा जा सकता है। उस मानक रूप जिसमें भारत के विदेशी ऋण के आंकड़ों का नियमित आधार पर प्रचार प्रसार किया जाता है, के अतिरिक्त अन्य वर्गीकरण; (i) उधारकर्ता और ऋणदाता दृष्टिकोण के आधार पर; (ii) सरकारी और गैर-सरकारी ऋण में बांटते हुए; तथा (iii) आधिकारिक और निजी उधारकर्ताओं के हिस्से मापते हुए तैयार किया जा सकता है। विदेशी ऋण मुद्रा संघटन, विभिन्न लिखतों के अंतर्गत विदेशी ऋण का समूहीकरण और ऋण पोर्टफोलियो में रियायत के घटक को माप कर भी विश्लेषित किया जा सकता है।

4.1 ऋणदाता-वार वर्गीकरण

4.1.1 विदेशी ऋण को ऋणदाता वर्गीकरणों अर्थात आधिकारिक ऋणदाता और निजी ऋणदाता के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। आधिकारिक ऋणदाताओं में आईएमएफ से लिए गए ऋणों सहित बहुपक्षीय और द्विपक्षीय अभिकरण, द्विपक्षीय ऋण के निर्यात ऋण संघटक, रक्षा खरीद हेतु निर्यात ऋण और रुपया ऋण शामिल हैं। दूसरी ओर, निजी ऋणदाताओं में वाणिज्यिक उधारों, अनिवासी भारतीय जमाराशियों और आधिकारिक ऋणदाताओं के अंतर्गत शामिल ऋणों को छोड़कर निर्यात ऋण और अल्पावधिक ऋण संबंधी ऋणदाता शामिल हैं।

4.1.2 बहुपक्षीय और द्विपक्षीय स्रोतों से बकाया ऋण मार्चान्त 2002 और मार्चान्त 2007 के बीच निरपेक्ष अर्थ में 9.6 प्रतिशत बढ़े हैं। आईएमएफ से प्राप्त ऋणों (क्रयों) को 2000 तक पूर्णतया चुकाया (पुनर्खरीद) जा चुका था। निजी स्रोतों से बकाया उधार जिनमें वाणिज्यिक उधार, निर्यात ऋण और अनिवासी भारतीय जमाराशियां शामिल होती है, इस अवधि के दौरान लगभग 1.9 गुणा बढ़ गए। रुपया ऋण का घटक 3 बिलियन अमरीकी डालर के अधिक स्तर से गिरता हुआ 2 बिलियन अमरीकी डालर से भी कम हो गया। अल्पावधिक ऋण ने 2002 और 2007 के बीच लगभग चार गुणा की उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की है। निजी ऋणदाताओं का हिस्सा जो मार्चान्त 2002 में 50 प्रतिशत से कम था, क्रमिक रूप से बढ़कर मार्चान्त 2007 में लगभग 65 प्रतिशत हो गया (सारणी 4.1)।

सारणी 4.1 : ऋणदाता श्रेणी के अनुसार बकाया विदेशी ऋण

(मिलियन अमरीकी डालर)

क्रम सं.	घटक	(मार्च अंत)								
		1991	1996	2001	2002	2003	2004	2005सं.	2006सं.	2007त्व.अ
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
1.	बहुपक्षीय	20,900	28,616	31,105	31,899	29,994	29,297	31,698	32,559	35,641
2.	द्विपक्षीय	14,168	19,213	15,975	15,323	16,802	17,277	17,011	15,734	16,104
3.	अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष	2,623	2,374	0	0	0	0	0	0	0
4.	निर्यात ऋण	4,301	5,376	5,923	5,368	4,995	4,697	5,021	5,419	6,964
5.	वाणिज्यिक उधार	10,209	13,873	24,408	23,320	22,472	22,007	27,857	26,902	42,780
6.	अनिवासी भारतीय जमा राशियां	10,209	11,011	16,568	17,154	23,160	31,216	32,743	35,134	39,624
7.	रुपया ऋण	12,847	8,233	3,719	3,034	2,822	2,720	2,301	2,031	1,949
क.	कुल दीर्घावधिक ऋण (1 से 7)	75,257	88,696	97,698	96,098	100,245	107,214	116,631	117,779	143,062
ख.	अल्पावधिक ऋण	8,544	5,034	3,628	2,745	4,669	4,431	7,529	8,696	11,971
ग.	**कुल विदेशी ऋण (क + ख)**	**83,801**	**93,730**	**101,326**	**98,843**	**104,914**	**111,645**	**124,160**	**126,475**	**155,033**
		(कुल ऋण की प्रतिशतता)								
i)	आधिकारिक ऋणदाताओं का हिस्सा	63.5	64.2	51.2	51.8	48.3	45.2	42.0	40.6	35.4
ii)	निजी ऋणदाताओं का हिस्सा	36.5	35.8	48.8	48.2	51.7	54.8	58.0	59.4	64.6

त्व.अ.- त्वरित अनुमान *सं. : संशोधित*

4.1.3 कुल ऋण में व्यष्टि घटकों के संबंधित हिस्सों में परिवर्तन होता रहा है। उदाहरणार्थ, 2002 और 2007 के बीच कुल ऋण में बहुपक्षीय ऋण का हिस्सा लगभग 32 प्रतिशत से गिरकर 23 प्रतिशत हो गया। इसी अवधि के दौरान कुल ऋण में द्विपक्षीय ऋण भी 16 प्रतिशत से गिरकर 10 प्रतिशत हो गया। निर्यात ऋण का हिस्सा मार्चान्त 2002 और मार्चान्त, 2007 में कुल ऋण के लगभग 5 प्रतिशत पर बना हुआ है। जबकि वाणिज्यिक उधार 2002 में 24 प्रतिशत से बढ़कर 2007 में लगभग 28 प्रतिशत हो गया, इसी अवधि में अनिवासी भारतीय जमाराशियां 17 प्रतिशत से बढ़कर लगभग 26 प्रतिशत हो गई। इसी अवधि में रुपया ऋण लगभग 3 प्रतिशत से गिरकर 1 प्रतिशत हो गया। अल्पावधिक ऋण का अनुपात 2002 में 3 प्रतिशत से बढ़कर 2007 में 7 प्रतिशत से अधिक हो गया।

4.2. उधारकर्ता-वार वर्गीकरण

4.2.1 विदेशी ऋण को उधारकर्ता श्रेणियों के अनुसार भी वर्गीकृत किया जा सकता है। सरकारी (सॉवरेन) और गैर-सरकारी दो प्रमुख श्रेणियां हैं। विदेशी सहायता कार्यक्रम के अंतर्गत सरकारी लेखे पर बहुपक्षीय और द्विपक्षीय उधार के अतिरिक्त, सरकारी ऋण में आईएमएफ से लिए गए उधार, रुपया ऋण और सरकारी प्रतिभूतियों में एफआईआई के निवेश शामिल हैं। अल्पावधिक ऋण सहित विदेशी ऋण का शेष गैर-सरकारी ऋण के अंतर्गत दर्शाया गया है। कुल विदेशी ऋण में सरकारी ऋण का अनुपात गिरता रहा है जो मार्चान्त 1991 में 59.6 प्रतिशत से गिरकर मार्चान्त 2002 में 44.1 प्रतिशत हो गया और मार्चान्त 2007 में 31.4 प्रतिशत हो गया (सारणी 4.2)। (अनुबंध VI) ।

4.2.2 गैर-सरकारी ऋण को आगे वित्तीय, सरकारी और निजी क्षेत्रकों में वर्गीकृत किया जा सकता है। इनमें से निजी क्षेत्रक ने हाल के वर्षों में निरपेक्ष अर्थ में और उच्च वाणिज्यिक उधारों के चलते अपने हिस्से के संदर्भ में भी महत्व प्राप्त किया है। दीर्घावधिक गैर-सरकारी ऋण के अनुपात के संदर्भ में, निजी क्षेत्र का हिस्सा मार्चान्त 2002 में 22 प्रतिशत से बढ़कर मार्चान्त 2007 में लगभग 42 प्रतिशत हो गया।

सारणी 4.2 : उधारकर्ता वर्गीकरण के अनुसार विदेशी ऋण

(मिलियन अमरीकी डालर)

क्रम सं.	घटक	(मार्च अंत) 1991	1996	2001	2002	2003	2004	2005सं.	2006सं.	2007त्व.अ
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
I.	**सरकारी ऋण**	48,585	53,569	43,956	43,575	43,612	44,674	46,604	45,236	48,608
		(58.0)	(57.2)	(43.4)	(44.1)	(41.6)	(40.0)	(37.5)	(35.8)	(31.4)
	जिसमें से दीर्घकालिकः	48,585	53,569	43,956	43,575	43,612	44,674	46,604	45,236	48,608
	1. सरकारी खाता	34,317	43,404	40,727	40,965	41,216	41,142	43,621	43,427	46,596
	2. अन्य सरकारी ऋण	14,268	10,165	3,229	2,610	2,396	3,532	2,983	1,809	2,012
II.	**गैर-सरकारी ऋणः**	35,216	40,161	57,370	55,268	61,302	66,971	77,556	81,239	106,425
		(42.0)	(42.8)	(56.6)	(55.9)	(58.4)	(60.0)	(62.5)	(64.2)	(68.6)
क.	जिसमें से दीर्घकालिकः	26,672	35,127	53,742	52,523	56,633	62,540	70,027	72,543	94,454
	1. वित्तीय क्षेत्र*	-	-	32,661	32,367	37,032	40,575	43,454	41,185	47,888
	2. सरकारी क्षेत्र**	-	-	9,024	8,225	7,518	7,685	6,491	6,664	8,013
	3. निजी क्षेत्र***	-	-	12,057	11,931	12,083	14,280	20,082	24,694	38,553
ख.	जिसमें से अल्पावधिकः	8,544	5,034	3,628	2,745	4,669	4,431	7,529	8,696	11,971
III.	**कुल विदेशी ऋण**	83,801	93,730	101,326	98,843	104,914	111,645	124,160	126,475	155,033

कोष्ठकों में आंकड़े कुल विदेशी ऋण में प्रतिशतता को प्रतिबिंबित करते हैं।

* *वित्तीय क्षेत्र के ऋण बैंकों और वित्तीय संस्थाओं द्वारा लिए गए उधारों और दीर्घकालिक अनिवासी भारतीय जमाराशियों के द्योतक हैं।*

** *सरकारी क्षेत्र के ऋण गैर-वित्तीय सरकारी क्षेत्र के उद्यमों के उधारों के द्योतक हैं।*

*** *निजी क्षेत्र के ऋण गैर-वित्तीय निजी क्षेत्र के उद्यमों के उधारों के द्योतक हैं।*

सं. : संशोधित *त्व. अ : त्वरित अनुमान*

4.3 लिखत-वार वर्गीकरण

4.3.1 दीर्घावधिक बकाया विदेशी ऋण को उधार की लिखतों के अनुसार भी वर्गीकृत किया जा सकता है। ये लिखतें हैं बांड और नोट, ऋण, व्यापार क्रेडिट और जमाराशियां। सारणी 4.3 में उधारकर्ता और ऋणदाता समूहों के अन्तर्गत ऋण की विभिन्न लिखतें दर्शाई गई हैं।